LIBRARY

SCHOOL OF PLANNING AND ARCHITECTURE, BHOPAL

S.No.-5 (JANUARY 2024)

पीपुल्स समाचार Page No. – 11 19/01/2024

मंदिर के मायने विषय पर लेक्चर

भारत में मंदिर अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे हैं: प्रो. कैलाश

रिपोर्टर • IamBhopal
Mobile no. 9827080406

भारत में मंदिरों का विकास स्वतः स्फूर्त भावना से हुआ। यहां पर मंदिर-धर्म, विद्या, व्यापार और राजनीति का केंद्र रहे हैं। भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला की फैलो प्रो. अल्पना त्रिवेदी ने जनजातीय संग्रहालय में भारत में मंदिर के मायने विषय पर व्याख्यान दिया।

दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान द्वारा आयोजित लोकरुचि संवाद में प्रो. त्रिवेदी ने कहा कि भारत में मंदिर मानव-जीवन, अन्न-क्षेत्र के साथ-साथ सेवा के भी प्रमुख केंद्र रहे हैं। मंदिर ही मानव के समस्त संस्कारों की धुरी हैं, जिसका संबंध जन्म से लेकर मृत्यु संस्कारों तक जुड़ा है। मंदिरों के अलावा भारत में संपूर्ण तीर्थ केन्द्रों से भारत एकंता के सूत्र में बंधा हुआ है। यहां कला, संगीत, साहित्य, नृत्य आदि विकसित हुए। पुरातत्वविद् डॉ. नारायण व्यास ने बताया कि भारत में पत्थर का पहला मंदिर सांची में बनाया गया था। स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के निदेशक प्रो. कैलाश राव ने कहा कि संपूर्ण भारत के मंदिरों में बने द्वारपाल इतने शक्ति संपन्न बनाए जाते हैं कि उनसे अंदर बैठे भगवान की शक्ति का आभास हो जाता है। मंदिर अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे हैं, क्योंकि यहीं सारे उत्सव मनाए जाते थे और इनके आसपास व्यवसाय फलते-फूलते थे। कार्यक्रम का संयोजन थिंक इंडिया ने किया। इस मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा, निर्विकल्प शुक्ला भी उपस्थित रहे।